केदारनाथ अग्रवाल का सौंदर्य बोध

स्नातक भाग- 3
हिन्दी (प्रतिष्ठा)
पंचम पत्र

प्रगतिवादी कवि केदारनाथ अग्रवाल प्रेम एवं सौन्दर्य के कवि हैं। अग्रवाल जी प्रकृति प्रेम के लिए समस्त हिंदी कविता में एक विशिष्ट पहचान रखते हैं। जिस प्रकार उनकी प्रकृति चेतना छायावादी प्रकृति-चित्रण से जुदा है, ठीक उसी प्रकार उनका सौंदर्य बोध भी छायावादी सौंदर्य से अलग है।

केदारनाथ अग्रवाल सौंदर्य को व्यापक परिप्रेक्ष्य में देखते हैं। वे जीवनगत सौंदर्य के चितेरे हैं। उनका मानना है कि सौंदर्य समस्त प्रकृति में व्याप्त है। जीवन के सभी पक्षों में सौंदर्य का अनुभव कर लेते हैं।

उन्हें खेत-खलिहान में, प्रकृति की नैसर्गिक सुषमा में, नदी, वन, पर्वत में वह सौंदर्य दिखाई पड़ता है। इनका सौंदर्य बोध यथार्थ की कड़ी धूप से निःसृत है। छायावादियों की भाँति वे कल्पना लोक में सौंदर्य का विधान नहीं करते, अपितु आस पास के जीवन में इस सौंदर्य को देखते हैं :-

"ज्वार खड़ी खेतों में लहराती है
कहती है मेरे यौवन को बढ़ने देना
शाम सबेरे के रंगों में रंगने देना
मस्त हवा के हिलकोरों में हँसने देना।।"

कवि को बसंती हवा में सौंदर्य के दर्शन होते हैं :-

" हवा हूँ, हवा, मैं बसंती हवा हूँ।
चढ़ी पेड़ महुआ थपाथप मचाया,
~~गिरी धम्म से फिर चढ़ी आम ऊपर~~
उसे ~~भी~~ हिलाया, ~~उसे भी~~ डुलाया।।"

गिरी धम्म से फिर,
चढ़ी आम ऊपर,
उसे भी झकोर,
किया कान में 'कू',
उतर कर भगी मैं---।"

अग्रवाल जी की सौंदर्य दृष्टि मार्क्सवादी सौंदर्य चेतना से अनुप्राणित है, इसीलिए उनका सौंदर्य बोध छायावादी भावुकता से अलग है। वे सौंदर्य को जीवन से जुदा नहीं मानते। ग्रामीण जीवन का सौंदर्य उनकी कविताओं में प्रचुरता से उपलब्ध है :-

"छोटा सा गाँव हुआ केसर की क्यारी सा
कच्चे घर डूब गए कंचन के पानी में।"

~~चने~~ चने के पौधे उन्हें सिर पर मुरेठा बाँधे बुन्देलखंडी युवक प्रतीत होता है जबकि 'अलसी' पतली कमर वाली युवती जो उसके पास ही खड़ी है :-

"एक बीते के बराबर यह हरा ठिगना चना।
बाँधे मुरेठा शीश पर छोटे गुलाबी फूल का।
पास ही मिल कर उगी है बीच में अलसी हठीली।
देह की पतली कमर की है लचीली।"

कवि ने सौंदर्य के उन्माद एवं वैभव को अपने-अपने आस पास के जीवन में देखा है, जहाँ सावन की गुदगुदी हवा तन मन को मस्त कर देती है :-

"सावन की गुदगुदी हवा से,
मस्त हुआ पत्तों का कोना।
पेड़ तले महुआ मैं बैठा,
लगा बजाने महुअर मन की।"

अग्रवाल जी के काव्य संकलन "नींद के बादल" में प्रेम परक कविताएँ हैं जो कवि की सौंदर्य दृष्टि व प्रणय भावना को व्यक्त करती हैं। वह यह स्वीकार करता है कि प्रिया की याद

से कविता का जन्म अनायास होता है — "कविता यों ही बन जाती है बिना बनाए। क्योंकि हृदय में तड़प रही है याद तुम्हारी।।"

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि कविवर केदारनाथ अग्रवाल की सौंदर्य चेतना ग्रामीण परिवेश से जुड़ी हुई है, वह हृदय की वास्तविक अनुभूति है, तथा उसमें काल्पनिक भाव बोध का नितांत अभाव है। यह सौंदर्य दृष्टि मार्क्सवादी चेतना से भी अनुप्राणित है।